कानों में कंगना

(राधिकारमण प्रसाद सिंह)

-दिव्या
अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग
वैशाली महिला कॉलेज, हाजीपुर

शेषांश :—

* किसी भी व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण उसका स्वाभिमान और आत्मसम्मान होता है। किरन के लिए भी उसका आत्मसम्मान सर्वोपरि था। यही कारण था कि उसने कभी भी नरेन्द्र से अपने अधिकारों की माँग नहीं की। उसने सब कुछ झेलने का निर्णय लिया, अपने ही अधिकारों को माँग कर वह स्वयं की दृष्टि से गिरना नहीं चाहती थी। उसने नरेन्द्र को कभी अपने आँसू नहीं दिखाये। वह नहीं चाहती थी कि नरेन्द्र दया भाव से प्रेरित होकर किरन के पास आये या उससे सहानुभूति व्यक्त करे।

वह नरेन्द्र की दया का पात्र नहीं बनना चाहती थी, वह तो उसके प्रेम का पात्र होना चाहती थी। उसने आत्मसम्मान को गवाँकर जीने से, उसके साथ मरने को श्रेष्ठ माना। भारतीय आदर्शों का निर्वाह करते हुए रिश्ते में त्याग करने का तात्पर्य यह नहीं कि व्यक्ति अपना आत्मसम्मान गंवाँ दे। वह त्याग समर्पण का प्रतीक है, जो स्वेच्छा से किया जाता है। किरन में आदर्श भारतीय नारी की तरह समर्पण और त्याग की पराकाष्ठा देखने को मिलती है और साथ-साथ स्वाभिमान की रक्षा की भावना भी उसमें विद्यमान है।

शिवकारमण प्रसाद सिंह ने किरन के माध्यम से भारतीय नारी के उदात्त चरित्र को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हमारी परम्परा में नारी का सम्मान पुरुषों से अधिक किया जाता है। हम राम से पहले सीता का

नाम लेते हैं, श्याम से पहले राधा है हमारे लिए। इसका कारण है- नारी के उदात्त गुण। उसका प्रेम, उसकी ममता, सहनशीलता, त्याग, संवेदनशीलता जैसे अनेक उदात्त गुण उसे श्रेष्ठ बनाते हैं। लेखक ने किरन में भी इनमें से कुछ गुणों का समावेश दिखलाया है। हम कह सकते हैं कि किरन का व्यक्तित्व एक आदर्श भारतीय नारी का प्रतीक है। उसके चरित्र में प्रेम, त्याग, सहनशीलता जैसे उदात्त गुणों का समावेश है। यही कारण है कि पाठकों की संवेदना किरन के प्रति अधिक है। वह पाठकों के हृदय को स्पर्श करने में सक्षम हो पाती है क्योंकि वह एक सामान्य नारी, सामान्य पात्र के रूप में प्रस्तुत हुई है।